Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

रोमन और यूनानी इतिहासकारों के लेखन का तुलनात्मक अध्ययन

Krishan*

M.A. in History, UGC Net, Rohtak, Haryana

शोध सारः इतिहास-लेखन के क्षेत्र में यूनानी इतिहासकारों का अद्‌वितीय योगदान रहा है। उन्होंने केवल पूर्व के लेखकों के वर्णन को अपना आधार न बनाकर खोज और आलोचना के माध्यम से इतिहास-लेखन की ओर ध्यान दिया। वे केवल अपनी पारिवारिक वंश परम्परा में ही रुचि नहीं रखते थे अपितु तत्कालीन भूगोल एवं वातावरण के ज्ञान की प्राप्ति के प्रति भी सजग थे। यही कारण है कि उनके द्‌वारा लिखित इतिहास में उपरोक्त दोनों तत्व विशद रूप में पाये गये हैं। यूनानियों की तुलना में रोमन इतिहास लेखन की परम्परा का स्वरूप पिछड़ा हुआ है। चूँकि उन्होंने लम्बे समय तक इतिहास-लेखन की ओर कोई ध्यान नहीं दिया, अतः उनका चिन्तन मौलिक नहीं है। इस शोध-पत्र में रोमन और यूनानी इतिहासकारों के लेखन का तुलनात्मक अध्ययन के अध्ययन पर प्रकाश डाला गया है।

मुख्य शब्दः इतिहास-लेखन, चिन्तन, तुलनात्मक अध्ययन, रोमन और यूनानी इतिहासकार।

----------X----------

भिन्न-भिन्न काल के विद्‌वानों और इतिहासकारों ने अपनी आवश्यकताओं को दृष्टिगत करते हुए इतिहास लेखन की ओर ध्यान दिया है। उत्थान और पतन प्रकृति का शाश्वत नियम है और मानव आदिकाल से संघर्षरत रहा है। इतिहास के मुख्य रूप से दो स्वरूप प्रारम्भ में पाये जाते थे। प्रथम कथात्मक और दूसरा वैज्ञानिक। प्रथम में इतिहास के लेखन का स्वरूप मात्र एक कहानी रहा है परन्तु वैज्ञानिक अवधारणा के समर्थक प्रत्येक घटना के साथ कब, क्या, केसे और क्यों जैसे प्रश्न को उठा कर उसके स्वरूप को बदलने में सफल रहे हैं।

इतिहास-लेखन के क्षेत्र में यूनानी इतिहासकारों का अद्‌वितीय योगदान रहा है। उन्होंने इतिहास को साहित्य और दर्शन के समान ज्ञान की एक शक्तिशाली स्वतन्त्रा शाखा के रूप में स्थापित किया है। इतिहास के प्रति रुचि के कारण यूनानी इतिहासकारों ने सर्वप्रथम ऐतिहासिक साहित्य की रचना की ओर ध्यान दिया। वे केवल अपनी पारिवारिक वंश परम्परा में ही रुचि नहीं रखते थे अपितु तत्कालीन भूगोल एवं वातावरण के ज्ञान की प्राप्ति के प्रति भी सजग थे। यही कारण है कि उनके द्‌वारा लिखित इतिहास में उपरोक्त दोनों तत्व विशद रूप में पाये गये हैं। ऐतिहासिक महत्त्व की प्रथम रचना होमर की कविताओं के रूप में यूनानी विद्‌वानों द्‌वारा प्रस्तुत की गई परन्तु इसके लेखक के सम्बन्ध में इतिहासकारों और विद्‌वानों के मध्य तीव्र मतान्तर है। कवि के नाम के सम्बन्ध में व्यर्थ के विवाद में न पड़कर हमें उसकी विषयवस्तु की ओर अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिए जो यह प्रमाणित करता है कि कवि के सौन्दर्य के प्रति दृष्टिकोण उसकी जीवन्त बुदिमत्ता का परिचायक है। प्रो. शाटवैल ने स्पष्ट लिखा है कि होमर की कविताओं का श्रेय उसी प्रकार से यूनानियों को दिया जा सकता है जिस प्रकार कि ओल्ड टेस्टामेन्ट के लेखन का यहूदियों को दिया जाता है। होमर के पश्चात् दूसरा यूनानी विद्‌वान हेसियड को कहा जाता है जिसका ध्यान मुख्यतः धर्म की ओर था, परन्तु उसने इतिहास लेखन की ओर भी विशेष ध्यान दिया। उसने ईश्वर के जन्म और जनता के प्रति उसके व्यवहार का वर्णन भी अपनी पुस्तक में किया है। हेसियड ने युग-चक्र सिदान्त के आधार पर चार धातुओं के नाम के आधार पर चार युगों का वर्णन किया है जो स्वर्ण युग, रजत युग, कांस्य युग और लौह युग के नाम से जाने जाते हैं। अन्तिम काल को उसने मानव के दुखों और उत्पीड़न के समय के रूप में वर्णित किया है जबकि प्रथम युग की उसने अत्यधिक प्रशंसा की है। दूसरे अर्थात् रजत युग तक आते-आते मानव की स्थिति में हीनता की भावना का उदय होने लगा था, जो कांस्य युग व्यक्ति भावना शून्य होने के कारण परस्पर गृह कलह और संघर्ष की ओर अग्रसरित होने लगा था।

www.ignited.in

यूनान में इतिहास लेखन का वास्तविक स्वरूप छठी शताब्दी ईसा-पूर्व से प्रारम्भ हुआ। कविता के माध्यम को उचित न मानते हुए कालान्तर में विद्वानों ने गद्य के माध्यम से इतिहास लिखना प्रारम्भ किया। उन्होंने केवल पूर्व के लेखकों के वर्णन को अपना आधार न बनाकर खोज और आलोचना के माध्यम से इतिहास-लेखन की ओर ध्यान दिया। यूनानी लेखकों में सर्वप्रथम हमें हिकाटियस का वर्णन प्राप्त होता है जो हेरोडोटस का पूर्वगामी था। उसका जन्म छठी शताब्दी में यूनान के एक समृद परिवार में हुआ था। उसने मिड्ड का विस्तृत भ्रमण करने के बाद अपने ग्रन्थ को लिखा। जिसके प्रथम भाग में उसने ईरानी संसार का वर्णन प्रस्तुत किया और दूसरे में प्राचीन अवधारणाओं की आलोचना व खण्डन किया।

यूनानियों की तुलना में रोमन इतिहास लेखन की परम्परा का स्वरूप पिछड़ा हुआ है। उनके लेखन में यूनानी इतिहासकारों के समान न तो तीक्ष्णता और न ज्ञान है। इसलिए रोमन इतिहासकारों को यूनानी इतिहासकारों के समान श्रेणी में नहीं रखा जाता है। चूँकि उन्होंने लम्बे समय तक इतिहास-लेखन की ओर कोई ध्यान नहीं दिया, अतः उनका चिन्तन मौलिक नहीं है। वे साधारण रूप में अपने पूर्वगामी लेखकों के विचारों का ही समर्थन और अनुसरण करते रहे। यही कारण है कि रोम के इतिहास लेखन में हेरोडोटस और थ्यूसीडाईडस के समान योग्य कोई इतिहासकार नहीं दिखाई पड़ता था। रोम के लोगों ने इतिहास लेखन में कोई विशिष्ट योगदान प्रदान नहीं किया है परन्तु यूनानियों की इतिहास लेखन शैली अत्यन्त आकर्षक और प्रभावोत्पादक है और उनकी लेखन पदति में उनकी विश्लेषणात्मक क्षमता स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है। यूनानियों के विचारों में गहराई दिखाई देती है। वे इतिहास लेखन में विशेष रुचि रखते थे तथा उनका विचार था कि इतिहास एक दर्शन है। वे पक्षपात रहित इतिहास लेखन में विश्वास करते थे जबकि रोम के विद्वान मौलिक लेखक नहीं थे। वे केवल वर्णनात्मक पदति का प्रयोग करते थे उनका दृष्टिकोण मुख्यतः राजनीतिक और उपयोगितावादी था। वास्तव में रोम के लोगों ने ऐतिहासिक वर्णन की परम्परा यूनानियों से ग्रहण की थी और इस क्षेत्र में वे यूनानियों से अत्यधिक प्रभावित थे। इसलिए उनके इतिहास-लेखन में यूनानी प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है द्वितीय प्यूनिक युद्धों के समय तक रोमन विद्वानों ने इतिहास-लेखन की ओर कोई विशेष ध्यान आकर्षित नहीं किया। उन्होंने हेरोडोटस और थ्यूसीडाईडस जैसे महान् यूनानी विद्वानों के ग्रन्थों के बाद ही इस दिशा में अपना कार्य प्रारम्भ किया और अपनी उपलब्धियों एवं कार्यों को लिपिबद किया।

रोमन और यूनानी इतिहासकारों में अन्तर

रोमन इतिहासकार यूनानी इतिहासकारों के अनुसरणकर्ता मात्रा थे क्योंकि उनका दृष्टिकोण अधिक विस्तृत नहीं था। दोनों देशों से सम्बन्धित इतिहासकारों में निम्नलिखित प्रमुख अन्तर थे-

1. यूनानी इतिहासकारों के लेखन का क्षेत्रा अत्यन्त विस्तृत था और उन्होंने मानव जीवन के प्रत्येक पहलू के सम्बन्ध में लिखा है जबकि रोमन इतिहास लेखकों ने वुफछ महत्त्वपूर्ण वुफलीनतन्त्रा से सम्बन्धित घटनाओं का ही उल्लेख किया है।

2. यूनानियों ने जीवन के सभी महत्त्वपूर्ण पहलुओं का वर्णन किया है किन्तु रोम के इतिहासकारों ने जीवन के आधारभूत प्रश्नों का कोई वर्णन नहीं किया है।

3. यूनानी इतिहासकारों ने सत्य की खोज पर बल देते हुए उसकी आलोचनात्मक व्याख्या को महत्त्व दिया है परन्तु रोम के विद्वानों ने घटना से सम्बन्धित कारणों को जानने की ओर ध्यान नहीं दिया है और न ही सत्य को जानने की उत्कंठा दिखायी है।

4. समाज की स्थापना में यूनानियों ने व्यक्ति को कोई विशेष महत्त्व प्रदान नहीं किया है और केवल सार को आधार बनाया है परन्तु रोम के लोग राजतन्त्रा से अत्यन्त नजदीक से जुड़े हुए थे।

5. यूनानियों ने समस्त इतिहास के विवादास्पद पहलुओं के हल को स्पष्ट किया किन्तु रोम के विद्वानों ने जटिल समस्याओं की ओर कोई ध्यान नहीं दिया है।

6. यूनानियों ने इतिहास के स्तर को ऊँचा उठाते हुए उसे जीवन्त बनाये रखा है किन्तु रोमवासियों का जीवन के प्रति दृष्टिकोण असंगत और पक्षपातपूर्ण था।

7. यूनानियों के अनुसार नीतियों की कोई स्थायी विशेषता नहीं होती है और राज्य का स्वरूप निरन्तर परिवर्तनशील होता है परन्तु रोम के विद्वान राजतन्त्रा के स्थायित्व में विश्वास करते थे जो संस्कृति के विकास में सहायक है।

www.ignited.in

8. यूनानियों का रचनात्मक नेतृत्व में विश्वास था क्योंकि वे उसे संस्कृति एवं साहित्यिक विकास में सहायक समझते थे परन्तु रोम का इतिहास लेखन आत्म-कथाओं पर केन्द्रित था और वे साहित्यिक विकास में संस्कृति की भूमिका को महत्त्व नहीं देते थे।

9. यूनानी विद्वान न केवल इतिहास लेखन की विधा के जनक थे अपितु इतिहास के विकास में भी उन्होंने विशेष योगदान प्रदान किया था जबकि रोम के लोगों ने इतिहास लेखन सामग्री को केवल पराजित जातियों से ग्रहण किया था।

10. यूनानियों ने इतिहास में मानववाद को महत्त्व प्रदान करके इतिहास के क्षेत्रा को बढ़ाया था परन्तु रोम के विद्वान केवल राजनीतिक व सैनिक घटनाओं के अन्दर सिमटे रहे।

रोमन इतिहासकारों के यूनानियों की अपेक्षा पिछड़ा होने के कारण

इतिहास-लेखन के क्षेत्रा में रोमन इतिहासकार सदैव यूनानियों के मुकाबले में पिछड़े हुए रहे जिसके लिए मुख्य रूप से निम्नलिखित कारण उत्तरदायी कहे जा सकते हैं।

1. रोमन विद्वानों ने मूल साक्ष्यों को महत्त्व नहीं दिया और न ही तथ्य के आकलन के लिए विस्तृत प्रयास किये। उनके इतिहास लेखन का आधार सरकारी सूचनाएँ मात्रा थीं। इन सूचनाओं को देने वाले लोग भी कुशल नहीं थे और उन्होंने सूचना की विश्वसनीयता को प्रमाणित करने का कोई यत्न नहीं किया।

2. रोम के इतिहासकारों का दृष्टिकोण विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक नहीं था। वे घटना को लिखकर ही सन्तुष्ट हो जाते थे और वैज्ञानिक दृष्टिकोण की ओर उनका ध्यान कभी आकर्षित नहीं हुआ।

3. रोम के विद्वानों ने पराजित देशों की भावनाओं को जानने का कभी प्रयास नहीं किया, अतः उनके अभिलेख सत्य पर आधारित नहीं थे।

4. रोम के इतिहासविद् सदैव दरबारी शानो-शौकत और आनंद में निमग्न रहते थे। उन्हें तत्कालीन रीति-रिवाजों, तौर-तरीकों और व्यापार का भी उचित ज्ञान नहीं था और न ही वे साधारण लोगों की जीवन शैली से अवगत थे। अतः उन्होंने अपने लेखन में अपने व्यक्तिगत ज्ञान और अनुभव का प्रयोग नहीं किया।

5. रोमन इतिहासकारों ने देशों पर विजय प्राप्त करते समय इतिहास लेखन की ओर ध्यान नहीं दिया और जब इस दिशा में उनमें चेतना जागृत हुई, पर्याप्त देर हो चुकी थी अतः उन्होंने गुण के स्थान पर मात्रा को महत्त्व प्रदान किया। निःसन्देह उनके पास पर्याप्त स्रोत सामग्री थी अतः उन्होंने विस्तृत ग्रन्थ लिखने में उसका प्रयोग किया और उसके गुणों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

निष्कर्ष

यूनानी व रोमन इतिहासकार पूरी तरह से एक-दूसरे से कोसों दूर थे। यूनानियों का दृष्टिकोण सत्य पर केन्द्रित था और उनके इतिहास लेखन का क्षेत्रा भी अत्यन्त विकसित था जबकि रोम के विद्वानों ने गुण को महत्त्व न देकर मात्रा की ओर ध्यान दिया और मानव की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक गतिविधियों को पूरी तरह नकार दिया। यही कारण है कि यूनानी इतिहासकारों की तुलना में रोम के इतिहासकार अत्यन्त पीछे रह गये। पिफर भी यह स्पष्ट है कि दोनों देशों के इतिहासकारों ने अपने युग की परिस्थितियों और आवश्यकताओं को दृष्टि में रखते हुए उद्देश्यपूर्ण इतिहास की रचना हेतु महत्त्वपूर्ण प्रयास किये।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

बंद्योपाध्याय, पलासी से विभाजन तकः आधुनिक भारत का इतिहास -ओरियंट ब्लैकस्वान

विमल कुमार, कविता सैनी - भारतीय अर्थव्यवस्था का इतिहास गुलीबाबा पब्लिश हाउस प्राइवेट लिमिटेड

डॉ. मानिक लाल गुप्त-,मध्यकालीन भारत का इतिहास- अटलांटिक पब्लिशर्स

अनिता वर्मा- 'शिक्षा और समाज- गुलीबाबा पब्लिश हाउस प्राइवेट लिमिटेड।

दिलीप - आधुनिक भारत का सांस्कृतिक इतिहास - अटलांटिक पब्लिशर्स

www.ignited.in

Corresponding Author

Krishan*

M.A. in History, UGC Net, Rohtak, Haryana

krishan01257250539@gmail.com